शिक्षक - रवि शंकर राय, अर्थशास्त्र
दिनांक - 04-11-2020, वर्ग - ~~BA~~ MA - III

(3) राबर्टसन का समीकरण (Robertson's Equation)

राबर्टसन का समीकरण पीगू के समीकरण से मिलता जुलता है। दोनो के समीकरण में केवल इतना अन्तर है कि पीगू के कुल वास्तविक संसाधन R के स्थान पर राबर्टसन ने वस्तुओं तथा सेवाओं के कुल सौदों का परिणाम T लिया। राबर्टसन का समीकरण है —

$$M = PKT \quad \text{या} \quad P = \frac{M}{KT}$$

जहाँ -

P = कीमत स्तर।

M = मुद्रा की कुल मात्रा

T = वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल राशि

K = (1) का अंश जिसे लोग नकदी शेष के रूप में रखना चाहते है।

(4) कीन्स का समीकरण (Keynes Equation)

इसरी ओर कीन्स ने वास्तविक

कोष मात्रा समीकरण (Real Balance quantity Equation) का प्रतिपादन किया, जो केवल उपभोक्ता वस्तुओं के संदर्भ में है। कीन्स के अनुसार व्यक्ति अपने पास नकदी केवल उपभोक्ता वस्तुओं या सेवाओं को खरीदने के लिए रखते हैं। कीन्स का समीकरण है-

$$n = PK$$

जहाँ -

n = आम जनता के पास नकदी

p = उपभोक्ता वस्तु की कीमत

K = उपभोक्ता वस्तु का वह अनुपात जिसके लिए जनता नकदी n रखती है।

यदि K स्थिरांक हो तो n में अनुपाती वृद्धि होने से p (कीमत स्तर) में अनुपाती वृद्धि होगी।

☐ नकदी-कोष सिद्धान्त तथा लेन-देन सिद्धान्त में समानता —

मुद्रा के ~~स्थिर~~ परिमाण सिद्धान्त

के विषय में फिशर के लेन-देन दृष्टिकोण तथा केम्ब्रिज नकदी शेष दृष्टिकोण का थोड़ा बारीकी से विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होगा कि दोनों सिद्धान्त प्रायः एक से ही हैं। प्रथमतः, दोनों ही बताते हैं कि मूल्य स्तर मुद्रा की मात्रा पर निर्भर है। दूसरा - फिशर समीकरण का V तथा केम्ब्रिज समीकरण का K दोनों ही एक दूसरे के व्युत्क्रम (Reciprocals) हैं।

अर्थात $V = \frac{1}{K}$ ।

□ लेन-देन तथा नकदी शेष सिद्धान्त में तुलना

दोनों सिद्धान्तों में निम्नलिखित अन्तर है-

① दोनों सिद्धान्त मुद्रा के मांग के बारे में विभिन्न विचारों को प्रयोग में लाते हैं। लेन-देन सिद्धान्त (Transaction Approach) में मुद्रा की मांग वस्तुओं के विनिमय के लिए की जाती है। जबकी नकदी शेष सिद्धान्त (Cash Balance approach) में मुद्रा की मांग। मूल्य संचय के लिए की जाती है।

② लेन-देन सिद्धान्त में मुद्रा परिचलित होती है जबकि नकदी शेष सिद्धान्त में यह केवल निष्क्रिय शेषों के रूप में रखी जाती है। अर्थात मूल्य के संग्रह का कार्य करती है। फलस्वरूप लेन देन सिद्धान्त में मुद्रा का संचलन वेग (V) पर अधिक बल दिया जाता है। जबकि नकदी शेष सिद्धान्त में संचलन वेग की संकल्पनाओं को एकदम रद्द कर दिया गया है।

③ लेन-देन सिद्धान्त दीर्घावधि से सम्बन्ध रखता है जबकि नकदी शेष सिद्धान्त अल्पावधि से संबंधित है।

④ नकदी शेष समीकरण में अंतिम वस्तुओं से सम्बन्धित लेन-देन ही शामिल होता है जबकि लेन-देन समीकरण में सभी प्रकार के लेन देन शामिल होता है। जिससे लेन देन सिद्धान्त में वास्तविक कीमत स्तर निर्धारित करने में कठिनाईयां उत्पन्न होती है।